दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 22.08.2022

प्रकाशनार्थ

22 अगस्त, 2022 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में **'गिद्ध संरक्षण' संवाद– 2022 उत्तर प्रदेश सरकार के अभिनव प्रयास 'वन्यजीव संरक्षण परक इको टूरिज्म के क्षेत्र में आजीविका के अवसर'** विषय पर बोलते हुए **मुख्य अतिथि के.पी.दूबे, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव उत्तर प्रदेश, लखनऊ** ने कहा कि हमारे समाज में व्याप्त घरेलू व वन्यजीवों के मृत शरीर को पर्यावरण से सफाई करने में गिद्धों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान समय में पूरे देश में लगभग दो तीन हजार की संख्या में ही गिद्ध प्रजाति बची है। इस समय देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पक्षी संरक्षण का कार्य विशेष रूप से किया जाता है। रामायण काल के पक्षीराज जटायु गिद्ध प्रजाति के ही थे जो माता सीता के रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। ऐसे प्रजाति के संरक्षण में हमारे विशेष प्रयास होना चाहिए। इसी दिशा में कैम्पियरगंज में पूरे देश का एक विशेष गिद्ध संरक्षण केन्द्र खोला जा रहा है, जो मील का पत्थर शामिल होगा।

मुख्य वक्ता डॉ. विभु प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं उप निदेशक बीएनएचएस, मुम्बई ने कहा कि हमारे देश में करीब 04 करोड़ गिद्ध हुआ करते थें। 1990 के दशक तक आते–आते 90 प्रतिशत तक समाप्त हो गयें, जो 2007 तक लगभग 99 प्रतिशत गिद्ध समाप्त हो गये। गिद्ध एक समाजिक पक्षी है जो झुंड में रहता है यह 05 से 10 किलो तक होता है। एक घण्टें में 100 किलोमीटर तक की दूरी अपने पंखों से नाप सकता है। मृत जानवर को देख कर ये हवा में घूमने लगते हैं, जिसे देखकर 100 किमी तक के गिद्ध वहॉ तक आ जाते है जो लगभग 30 मिनट में ही 100 किलो तक के मृत जीव को खाकर समाप्त कर देते है। मृत जानवरों पर फंगस व बैक्टिरिया हो जाते है जो बाद में धरती में जाकर भूजल तक को प्रदूषित कर देते है। ऐसी स्थिति में मानव समाज के हित में गिद्धों का विशेष योगदान दिखता है। दुनिया में 23 प्रकार के गिद्ध होते है जिनमें से भारत में 09 प्रजाति के गिद्ध पाये जाते है। अलग–अलग प्रजाति के गिद्ध मृत जानवरों के अलग–अलग हिस्सों के मांस के साथ ही उनके हड्डियों को भी खाकर पर्यावरण की स्वच्छता में अपना विशेष योगदान देते है।

बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी गिद्ध संरक्षण के क्षेत्र में विशेष प्रयास कर रहा है। 2012 में गिद्धों के संख्या में बढ़ोत्तरी शुरू हुई है। गिद्धों की प्रजाति को बचाने के लिए पूरे देश में 08 प्रजनन केन्द्र चल रहे है, जिनमें 500 से ज्यादा बच्चें पैदा हो चुके है। वर्ष में एक बार सभी गिद्धों को पकड़कर उनके स्वास्थ की समुचित जाँच की जाती है। आने वाले समय में गिद्धों के संरक्षण व संवर्धन के लिए प्रयास जारी है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति में व्यक्ति और प्रकृति एक दुसरे के सहयोगी रहे है। प्रकृति में व्याप्त जीव, पशु–पक्षी समाज के लिए अपना योगदान देते है। पूरे सृष्टि में आतंकवाद का पहला शिकार पक्षीराज जटायु थे। भारत की संनातन संस्कृति वन्यजीवों से लेकर प्रकृति के सभी जीवों के संरक्षण की व्यवस्था से जुड़ी रही है। गिद्धों की प्रजाति जो प्रकृति का अपमार्जक है समय के साथ समाप्त हुआ है जिसके संरक्षण की पर्याप्त व्यवस्था की जा रही है। कोई भी देश अपनी भूमि से महान नहीं होता बल्कि अपने नागरिकों की भूमिका से महान होता है। नये भारत के निर्माण में हमारे युग–द्रष्टाओं ने हमसे जो अपेक्षा की है उस पर खरा उतरने का समय चल रहा है। आने वाले समय में भारत अपने सनातन संस्कृति के बल पर विश्वगुरू के रूप में अवश्य ही पुर्नस्थापित होगा।

कार्यक्रम का आयोजक आई.क्यू.ए.सी. दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर एवं गोरखपुर वन प्रभाग रहा, जिसमें बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी एवं हेरिटेज फाउंडेशन गोरखपुर का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनीता अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर डी.एफ.ओ विकास यादव, भीमसेन जी, राजीव दत्त पाण्डेय, प्रो. परीक्षित सिंह, अनिल भाष्कर, डॉ. शुभ्रांशु सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. आर.पी. यादव के साथ ही महाविद्यालय के छात्र/छात्राएँ एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहें।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह–प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क